।। अर्हम ।।

11.8.2010

15 अगस्त का दिन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिवस है। पराधिनता की स्थिति में श्वास लेने वाला हिन्दुस्तान इस दिन स्वाधिनता की श्वास लेने लगा था। परतंत्रता समाप्त हुई और देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। स्वतंत्रता का अपना आनन्द होता है। परन्तु वह स्वछंदता न बन जाये, इस जागरूकता की अपेक्षा है। भारत ने विकास किया है। उसका संचालन लोकतांत्रिक प्रणाली से हो रहा है। लोकतंत्र में भी अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा होना आवश्यक है। उसके बिना प्रजातंत्र कल्याणकारी नहीं होता।

भारत ऋषियों का देश भी है। यहां अतीत में भी महर्षी हुए हैं। आज भी विभिन्न संत तपस्या कर रहे हैं, देश वासियों को पथदर्शन भी दे रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी 20वीं सदी के भारत के महान संत थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया और उसके द्वारा जन–जन में संयम और नैतिकता का संदेश फैलाने का प्रयत्न किया। अणुव्रत की आत्मा संयम है। उसका घोष है संयमः खलु जीवनम् – संयम ही जीवन है। संयम से अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। आज अपेक्षा है ऐसे नैतिकता एवं संयम की आवाज को बुलंद करने वाले प्रयासों की। जब ऐसे प्रयास करेंगे तो स्वतंत्र भारत की जनता राह नहीं भटकेगी और स्वतंत्रता को सही मायने में जी सकेगी।

सरदारशहर **आचार्य महाश्रमण**